## दिनांक 20 धन्तुबर, 1983

सं भो.वि./यमुना/322-83/56833.— भूं कि हरियाणा के राज्यनाल की राय है कि मैसर्ब जनदीन इलस्ट्रीकल इन्जीनियरिंग कम्पनी, इन्डस्ट्रीयल ऐरिया, यमुनानगर, के श्रामिक श्री हंस राज तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

बौर चूं कि इरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय संमझते हैं;

इसलिए, प्रव, भौद्योगिक विवाद पश्चिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/ 15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़से हुए, प्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीवाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जी कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या बिवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री हंस राज की सेबाघों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./एफ.डी./204-83/57393.—चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि मै.पी.एच. फोर्राजग, प्लाट नं० 300, सैक्टर-24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री सीता राम ग्राजाद तथा उसके प्रबन्धकों के माध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

## दिनांक 28 मक्तूबर, 1983

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद प्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा श्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7क के ग्रधीन श्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा फरीदाबाद को नीचे विनिदिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं:—

क्या श्री सीता राम प्राजाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./एप. डी./253-83/57400. चंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि मैं. राम सरन धनी राम गोटा धाला एन ग्राई.टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री मंगरू तथा उसके प्रबन्धकों के माध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के रूप्यन्ध में कोई श्रीबोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यजाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीव समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, भौद्योगिक विवाद प्रधितियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई भिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उकत श्रधितियम की घारा 7क के ग्रधीन भौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या इससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री मंगरू की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./रोहतक/208-83/57407,—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. ऐ. के. इंण्डस्ट्रीज प्रा०लि०, बहादुरगढ़ (2) ए.के. भाई. इन्टरनेशनल प्रा० लि०, बहादुरगढ़ के श्रमिक श्री मुख्तयार सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद श्रिष्ठितियम, 1947 की धारा 10 की उपघार। (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मधिसूचना सं० 9641—1—श्रम—24/32573, दिनांक, 6 सबम्बर, 1970 के साथ पटित सरकारी अधिकृष्यना संव 3864-ए.ए.स.म्रो.(ई)-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा एवत अधिक्यिम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम व्यायालया रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रक्षकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री मुख्तयार सिंह की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. क्रो.चि./एफ.डी/238-83/57414.—चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राथ है कि मैं.इलेंक्रिक टूरज एण्ड िवाईसिर प्रा० लि०, 17-डी., एन.बाई.टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री धर्मपाल सिंह वर्गा तथा उसके प्रयन्धकों के माध्य इसमें इसके बाद किवित मामले के सम्बन्ध में कोई ब्रौदोगिक विवाद है;

ग्रौर चंतिः हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, श्रव, श्रीचोधिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 क के श्रधीन श्रीचोधिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रसा या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्याय-निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री धर्मपाल सिंह वर्माकी सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. ग्रो.वि./ग्राई.डी./सोनीपत/201-83/57421.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हस्तनपुर मैंटल प्रा॰िल॰, जी.टी. रोड़, कुण्डली सोनीपत, के श्रीमक श्री ग्रम्यास तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित सम्बन्ध में कोई ग्रीदोगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा () के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरिथाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्त्रर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहनक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत था उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

वया श्री अभ्यास की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. म्रो. वि./म्राई.डी.सोनीपत/201-83/57428.—चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि मैं. हस्तनापुर मैटल प्रार्शल०, जी.टी. रोड़, कुण्डली, सोनीपत के श्रमिक श्री जय चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई म्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसिनए, अब, औद्योगिक विवाद प्रधिनियम 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी सिंधसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए. एस. श्रो.(ई)-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यावालय, रोहतक, को थिवादग्रस्त था उससे सुसंगत था उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भाभला न्यार्थीनर्णथ हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो विधादग्रस्त भामला है था उक्त थिवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री जय चन्द्र की सेवाग्रों का समापन त्थायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहृत का हकदार है ?